८१६ बंबई, कार्त्तिक वदी ५, १९५४

आपके लिखे पत्र मिले हैं।

अमुक सद्ग्रंथोंका लोकहितार्थ प्रचार हो ऐसा करनेकी वृत्ति बतायी सो ध्यानमें हैं। मगनलाल आदिने दर्शन तथा समागमकी आकांक्षा प्रदर्शित की है वे पत्र भी मिले हैं।

केवल अंतर्मुख होनेका सत्पुरुषोंका मार्ग सर्व दुःखक्षयका उपाय है, परंतु वह किसी ही जीवको समझमें आता है। महत्पुण्यके योगसे, विशुद्ध मतिसे, तीव्र वैराग्यसे और सत्पुरुषके समागमसे वह उपाय समझमें आने योग्य है। उसे समझनेका अवसर एक मात्र यह मनुष्य देह है। वह भी अनियत कालके भयसे गृहीत है; वहाँ प्रमाद होता है, यह खेद और आश्चर्य है। ॐ

८१९ बंबई, मार्गशीर्ष सुदी ५, रवि, १९५४

ॐ

खेद न करते हुए शूरवीरता ग्रहण करके ज्ञानीके मार्गपर चलनेसे मोक्षपट्टन सुलभ ही है। विषयकषाय आदि विशेष विकार कर डालें, उस समय विचारवानको अपनी निर्वीर्यता देखकर बहुत ही खेद होता है, और आत्माकी वारंवार निंदा करता है, पुनः पुनः तिरस्कार-वृत्तिसे देखकर, पुनः महापुरुषके चरित्र और वाक्यका अवलंबन ग्रहण कर, आत्मामें शौर्य उत्पन्न कर, उन विषयादिके विरुद्ध अति हठ करके उन्हें हटाता है; तब तक हिम्मत हारकर बैठ नहीं जाता, और केवल खेद करके रुक नहीं जाता। इसी वृत्तिका अवलंबन आत्मार्थी जीवोंने लिया है; और इसीसे अंतमें विजय पाई है। यह बात सभी मुमुक्षुओंको मुखाग्र करके हृदयमें स्थिर करना योग्य है।

८२२ आणंद, पौष वदी ११, मंगल, १९५४

आज सबेरे यहाँ आना हुआ है। लीमडीवाले भाई केशवलालका भी आज यहाँ आना हुआ है। भाई केशवलालने आप सबको आनेके लिये तार किया था सो सहजभावसे था। आप सब कोई न आ सके यों विचार कर इस प्रसंगपर चित्तमें खिन्न न होवें। आपके लिखें पत्र और चिट्ठी मिले हैं। किसी एक हेतुविशेषसे समागमके प्रति अभी विशेष उदासीनता रहा करती थी, और वह अभी योग्य है, ऐसा लगनेसे अभी मुमुक्षुओंका समागम कम हो ऐसी वृत्ति थी। मुनियोंसे कहें कि विहार करनेमें अभी अप्रवृत्ति न करें; क्योंकि अभी तुरत प्रायः समागम नहीं होगा। पंचास्तिकाय ग्रंथका विचार ध्यानपूर्वक करें।